वैदिक विज्ञान की ओर

15

उधर विश्व भर के सम्प्रदायों के विद्वानों, पण्डित, पादरी, मौलवी अथवा अन्य साधुओं पर दृष्टि डालें, तो स्पष्ट होता है कि विश्व में सर्वाधिक खून मजहब के नाम पर ही बहाया गया है। इस रक्तरंजित इतिहास की चर्चा करना यहाँ आवश्यक नहीं है। संसार के प्रबुद्धजन स्वयं इस विषय में निष्पक्ष चिन्तन करके देखें। इन धर्माचार्यों ने कभी यह विचारने का प्रयास नहीं किया कि जिस ईश्वर, खुदा या गॉड से वह अपने विरोधियों के विनाश की प्रार्थना करते हैं अथवा उन्हें नष्ट करने की शक्ति मांगते हैं, वे मनुष्य भी तो उसी ईश्वर, खुदा वा गॉड की ही सन्तान हैं। दोनों विरोधी पक्ष अपने-२ ईश्वर वा खुदा से एक-दूसरे के नाश की प्रार्थना करते हैं, तब वह ईश्वर अथवा खुदा किसकी सुनेगा? इसका कारण यही है कि वे नहीं जानते कि जिसे वह ईश्वर कहते हैं, वह क्या वास्तव में ईश्वर है? वे सृष्टि रचना के विषय में वैज्ञानिक दृष्टि से कुछ भी नहीं विचारते। जब तक वे इस विषय में नहीं विचारेंगे, तब तक वे यह जान ही नहीं पाएंगे कि ईश्वर अथवा खुदा कैसा है, कहाँ रहता है एवं क्या करता है? यदि वह सृष्टि रचयिता है, तो वह अपना यह कार्य कैसे करता है, उसका क्रिया विज्ञान क्या है? इसका तात्पर्य यह हुआ कि वे ईश्वर वा खुदा आदि को मानते तो हैं, पूजते भी हैं परन्तु उसके यथार्थ स्वरूप से नितान्त अनभिज्ञ हैं ऐसी स्थिति में उनकी पूजा, इबादत अथवा प्रार्थना सब कुछ भ्रान्त ही होगी। यही कारण है कि चोर, डाकू, लुटेरे, आतंकवादी सभी अपने-२ मिशन की सफलता के लिए अपने-२ ढंग से पूजा करते हैं और अपने ईश्वर से अपने दुष्ट मिशन को पूरा करने की प्रार्थना करते हैं।

मेरे मित्रो! जरा विचारें कि ईश्वर के विषय में वैज्ञानिक सोच के अभाव में सम्पूर्ण मानव समाज मिथ्या आस्थाओं में फंसा कैसे-२ पाप कर रहा है? कैसे-२ संसार में दुःख, अशान्ति व आतंक का कारण बन रहा है।

क्रमशः .....

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक